

भारतीय गौ सेवा/संवर्धन पर परिकल्पना पत्र (भाग 1)

सुबोध कुमार (subodh1934@gmail.com) मोबाइल संपर्क : 9810612898

1-प्राक्कथन

भारतीय परम्परा में गौ हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। परंतु भारत वर्ष के शासनाधिकारियों ने गौ को कभी कृषि तक का भी अभिन्न अंग नहीं माना है। यह विदेशी शासन व्यवस्था की भारत वर्ष को एक देन है, जो आज भी हमारी सरकारों की नीति में चली आ रही है।

अपने भारत वर्ष आगमन के उपरान्त अंग्रेजों को यहां सन 1835 के लार्ड मैकाले की स्वयं लिखित रेपोर्ट के आधार पर अनेक विलक्षणताएं दिखाई दीं थीं। एक तो आर्थिक सम्पन्नता जिस के रहते यहां कोई भी भिखारी नहीं मिलता था, दूसरे शतप्रतिशत साक्षरता, तीसरे बुद्धिजीवियों ब्राह्मणों की विलक्षण मस्तिष्क शक्ति जिस के द्वारा वे अगणित वैदिक मंत्रों को याद रख पाते थे। व्यापारी गण अपने मस्तिष्क में ही व्यापार सम्बंधित सारा गणित और विवरण रख लेते थे। इन उपलब्धियों के मूल में थीं भारतीय गुरुकुल प्रणाली जिस में सब को

शिक्षा , भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित जीवन शैली स्वच्छ आहार स्वास्थ्य ज्ञान उपलब्ध था । हर परिवार में, गोचर में स्वपोषित गौ माता, जिस के अमृत तुल्य धारोष्ण दूध से समाज को उत्कृष्ट मस्तिष्क और मानसिकता के साथ जैविक कृषि द्वारा स्वास्थ्य हितकारी अन्न भी मिलता था ।

1.1स्वावलम्बन: भारत वर्ष में जनसामान्य अपना काम स्वयं करते थे। अपने स्वयं के घरेलु काम करने के लिए नौकर रखने की प्रथा जैसी आज शहरों में मिलती है, अन्गरेजों की नकल है। सामान्यतः लोग स्वरोजगार से अपना जीवन यापन करते थे। किसी की नौकरी करना भारत वर्ष की परम्परा में सब से छोटा काम समझा जाता था । कृषि कार्य को सब से उत्तम माना जाता था ।

देश में कोई भिखारी भी नहीं दीखता था। सामाजिक जीवन शैली, आपसी सहयोग से आत्मनिर्भर थी। खान पान की सब सामग्री, रहन सहन के साधन घरेलु स्थानीय लघु उद्योगों से सुगमता से मिल जाते थे। सब सामाजिक कार्यों में जैसे जलाशयों का रखरखाव, गली सड़कों, गोचर भूमि की देखभाल, देवालयों, गुरुकुलों की सेवा, गोधन का गोशालाओं वृषभ इत्यादि के उन्नत रखने में, खेतों की बुआइ, कटाइ, उत्तम बीज आदि आपस में बांट कर सब लोग अपना दायित्व पूरी तरह से निभाते थे।

सादगी- सब लोग लगभग एक से जीवन स्तर से रहते थे। कपड़े पहरावा सब का लगभग एक सा था। फ़ालतू खर्च में कोई रसिच नहीं रहती थी। वेश भूषा से ऊंच नीच का अनुमान कठिन था। अपरिग्रह हमारी सामाजिक मान्यताओं में बड़ा महत्व रखता था। ऊंच नीच का भेद भाव नहीं था। नकद पैसे का इतना महत्व कभी नहीं था।

1.2नौकर शाही का आरम्भ

भारत वर्ष जैसे बड़े देश पर शासन करने के लिए ,अन्ग्रेजी नीतियों के अनुसार चलाने के लिए, अन्ग्रेजी शासन को अनेकों सरकारी कर्मचारियों की सेवाओं की आवश्यकता थी। आरम्भ में सभी प्रशासनिक कर्मचारी प्रवासी अन्ग्रेज होते थे।इन पर खर्चा इतना आने लगा कि सन 1826 तक ईस्ट इन्डिया कम्पनी घाटे में आने लगी। सन 1828 में विलियम बैन्टिंग को गवर्नर जेनेरल बना कर प्रशासनिक घाटे को कम करने की योजना कार्यान्वित करने के लिए नियुक्त किया गया। विलियम बैन्टिंग ने पहली बार प्रशासनिक सेवाओं में अन्ग्रेजी पढ़े सस्ते भारतीय कर्मचारियों को भरती करने की योजना बनाई। परन्तु कठिनाई यह भी थी कि अन्ग्रेजी पढ़ाने के बाद भी भारतवासी कोई नौकरी करने के लिए आसानी से मिलता ही नहीं था। (आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में नौकर नहीं मिलते)। भारतीय परम्परा में कृषि सब से उत्तम उस के बाद व्यापार और नौकरी आजीविका का अंतिम विकल्प माना जाता था।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निशुल्क गुरुकुल शिक्षा और गौ आधारित सामाजिक स्वावलम्बी जैविक कृषि की अर्थ व्यवस्था के चलते अन्ग्रेजी सरकार की भारत वर्ष में नौकरी करने के लिए लोग न मिलने की समस्या का समाधान तत्कालीन इंग्लैन्ड के शिक्षा मंत्री लार्ड मैकाले द्वारा निर्धारित योजना से किया गया। मैकाले सन 1834 में भारत पधारे।लगभग एक वर्ष के भारतीय परिस्थिति के अध्ययन के पश्चात मैकाले ने अपनी योजना प्रस्तुत की। यही सन 1835 की मैकाली शिक्षा नीति आज भी स्वतन्त्र भारत का गला घोट रही है।

मैकाले कि नीति में भारतवर्ष की सब तत्कालिक पारम्परिक व्यवस्थाएं अंग्रेज शासन के निशाने पर थीं।

जहां गुरुकुल प्रणाली के स्थान पर मैकाली शिक्षा नीति चलाइ गई, वहीं भारतीय अर्थ व्यवस्था को नष्ट करने के लिए कृषि का महत्व कम करने और गौ माता को समाप्त करने का षड्यंत्र भी चलाया गया।

ग्रामीण क्षेत्र पिछड़े रहने से ही नगरों की ओर नौकरी के लिए पलायन, सरकारी सेवा के लिए नौकर और सेना के लिए भर्ती के लिए लोग मिल सकते थे। आज भारत वर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हुए 6 दशक बीत चुके, परन्तु हम इस दिशा में कोई सुधार नहीं कर पा रहे हैं। आधुनिक विद्वान भारतीय शासनाधिकारियों को भी यही मैकाले द्वारा स्थापित योजना पसन्द आती है।

दुर्दशा यह है कि आज सामान्यतः केवल नौकरी पा लेना ही हमारे भारतीय युवावर्ग के जीवन का लक्ष्य बन कर रह गया है। सारी भारतीय शिक्षा केवल नौकरी को ही लक्ष्य में रख कर होती है। ज्ञान पिपासा, मौलिक सोच, सृजनात्मक शोध वैज्ञानिक अनुसंधान, स्वाध्याय, स्वरोजगार की ओर विरले ही आकृष्ट होते हैं। छोटे किसान की कृषि, औद्योगिक व्यापारिक-स्वरोजगार को सरकारी नीतियां भी नौकरशाही के चलते कोई प्रोत्साहन नहीं दे पा रहीं। बड़े उद्योग ही अपने सामर्थ्य से आगे बढ़ पाते हैं।

हमारी शिक्षा को भारतीय युवा वर्ग में सत्साहस, ज्ञान प्राप्त करने की भूख, परिश्रम द्वारा- आत्म विश्वास द्वारा जीवन में अपना लक्ष्य बनाने की वृत्ति उत्पन्न करना अपना लक्ष्य बनाना होगा। खेद इस बात पर है कि हमारी सरकारें भी किताबी शिक्षा को ही नौकरी का आधार मानती हैं। औद्योगिक, कृषि, गौ पालन इत्यादि में भी प्रशिक्षण किताबी स्वरूप ले चुका है।

सरकार की पाश्चात्य शिक्षा आधारित आर्थिक नीति ही ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को प्रोत्साहित कर रही है। आज ग्रामीण युवा भी अपने पारिवारिक कृषि, गोपालन का छोड़ कर नगर में आ कर मामूली नौकरी करना चाहता है। कृषि करने को कोई अपना जीवन समर्पित नहीं करना चाहता। खेद इस बात का है यदि छोटे किसान खेती छोड़ रहे हैं तो उस के विकल्प के रूप में निजी क्षेत्र में बड़े कृषि फार्म भी राजनैतिक कारणों से स्थापित नहीं हो सकते। ग्रामीण क्षेत्रों तक में हर परिवार के लिए गोपालन सम्भव नहीं रहा है।

1.3 गोहत्या का आरम्भ

अंग्रेजों के आगमन पर बंगाल प्रांत में ही नहीं समस्त भारत वर्ष में गौ वंश जन संख्या से अधिक समझा जाता था। लार्ड क्लाइव ने 1760 में बंगाल में पहला बूचड़ खाना स्थापित किया, जिस की क्षमता 30,000 प्रतिदिन गोवध करने की बताई जाती है। देश में 1910 तक 350 बूचड़ खाने स्थापित हो चुके थे, जो दिन रात चालू रहते थे। 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात आज देश में 36,000 बूचड़ खाने चल रहे हैं। परिणाम यह है, कि शीघ्रता से गो वंश समाप्त हो रहा है। भारत वर्ष जो विश्व भर में सोना, चांदी, हीरे निर्यात करता था आज गोमांस, चमड़ा, हड्डियां निर्यात करता है। गौधन समाप्त होने से कृषि के लिए जैविक उर्वरक समाप्त हो गया। रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग से कीटनाशकों का प्रयोग भी अवश्यक हो गया। नागरिक क्षेत्र ही नहीं ग्रामीण क्षेत्र भी नए नए रोगों की चपेट में हैं। कृषि प्रधान देश भारत की जीवन शैली समाप्त हो चली है। हर किसान के घर में जब गाय होती है तब गरीब से गरीब परिवार को केवल शारीरिक श्रम से ही, बिना पैसा खर्च किए घर का शुद्ध दूध घी मट्ठा स्वास्थ्य वर्धक पोषण मिलता है। साथ ही गोबर गोमूत्र से कृषि जैविक बनी रहती है। रसायनिक कीटनाशकों का प्रयोग भी नहीं करना पड़ता। जब गोचर सब समाप्त हो गए, गौ माता के लिए गोचर में स्वपोषण से आहार पाना असम्भव हो गया।

अज्ञान की पराकाष्ठा यह है कि गौमाता अब वरदान के स्थान पर एक बोझ समझी जाती है, यहां तक कि एक बुद्धिजीवि वर्ग तो गोवध को हमारे आर्थिक बोझ को कम करने में सहायक ही समझता है।

वर्ष में 2008 में विश्व में गोमांस के उत्पादन में 9 वर्षों में पहली बार 1% की गिरावट बताई जा रही है। इस के विपरीत भारत वर्ष में 2008 में गोमांस उत्पादन में 5.5% की वृद्धि बताई जाती है।

1.4 ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन

नकद पैसे का भारतीय समाज में कभी इतना महत्व नहीं था जितना अब है। आज किसान को हर चीज़ अपने परिवार के लिए दूध सबज़ी ही नहीं, खेती के लिए उर्वरक व बीज भी नकद दाम देने से मिलता है। और जो भी कुछ पैसे बैंक से उधार ले कर खरीदा जाता है, उस में इतनी मिलावट या कमी होती है कि किसान की फसल नष्ट हो कर सारा परिश्रम व्यर्थ जाता है। घर का उत्पन्न पौष्टिक आहार न मिलने से परिवार का स्वास्थ्य घटता जाता है। ग्राम वासी अधिक स्वस्थ होने के स्थान पर नगर वासियों की ही तरह रोग ग्रस्त हैं। ग्रामों में उपयुक्त स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव भी ग्राम वासी की दरिद्रता बढ़ाता है। बैंक जब अपना उधार दिया पैसा वापिस मांगता है, तब सब आत्म बल समाप्त हो कर हीनता, दीनता की भावना से हाथ फैलाने या आत्म हत्या करने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं दीखता। यही तो अंग्रेज़ी शासन करना चाह रहा था, ग्रामीण क्षेत्रों का नाश, शहरों कि बढ़ती जनसंख्या से सब ओर

समाज में अशांति। इस अंग्रेजों के अधूरे को काम को स्वतंत्रता के बाद मैकाले प्रशिक्षित सरकारी तंत्र मानो पूरा करने में लगा है। जो अंग्रेज देश का धन लूट कर विदेश ले जा रहे थे अब सरकारी तंत्र की मिलीभगत से सुनियोजित ढंग से देश में ही हो रहा है।

1.5 स्वतंत्रता के पश्चात यह अपेक्षा थी कि भारतीय परम्परा के विरुद्ध अंग्रेजों द्वारा स्थापित विकृतियों का उन्मूलन हो सकेगा। परंतु मैकाली शिक्षा से उबर पाना अभी तक सम्भव नहीं बन पा रहा। गांधी जी ने कहा था, कि गोवध बन्द न होने पर स्वराज्य का कोई महत्व नहीं रह जाता, जिस दिन भारतवर्ष स्वतंत्र होगा सब बूचड़ खाने बंद कर दिए जाएंगे, इसी प्रकार 1929 में नेहरू जी ने कहा था कि यदि वे भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री बन पाते हैं तो पहला काम सब बूचड़ खाने बन्द करना होगा। आज ऐसा लगता है कि वे घोषणाएं सब हिन्दुओं को कान्ग्रेस में रखने के चुनावी भाषण मात्र थीं।

1.6 भारतीय डेरी उद्योग की भूमिका

विदेशी बैल कृषि योग्य नहीं होते इस लिए विदेशों में कृषि अश्व पर आधारित होती थी। ऊर्जा का परिमाण इसीलिए अश्व बल Horse Power होता है। विदेशों में गौ को दूध और मांस का साधन मात्र माना जाता है। इसी सोच के चलते स्वतंत्र भारत की सब सरकारें गाय को केवल डेरी उद्योग का एक पूरक के रूप में देखती आ रही हैं। भारतीय डेरी उद्योग का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों से दूध एकत्रित कर के शहरों को पहुंचाना मात्र है। पाश्चात्य देशों में डेरी उद्योग अधिकतर स्वयं बड़े बड़े फार्मों में गौ पालन कर के अपना निजी दुग्ध उत्पादित करता है। गौ की नसल सुधार, दूध की गुणवत्ता, चारे, आहार, गौ स्वास्थ्य, विषय पर अनुसंधान डेरी उद्योग अपने हित में स्वयं करता करता है। विदेशों में बड़े स्तर पर गोपालन बड़ी बड़ी डेरीफार्मों में होने के कारण के बायोगैस से मीथेन, केंचुए खाद इत्यादि का औद्योगिक स्तर पर उत्पादन और अनुसंधान होता है। विदेशों में बायोगैस केंचुआ खाद का उत्पादन बड़े स्तर पर करते हैं और आर्थिक लाभ भी बहुत लेते हैं।

भारत वर्ष में डेरी उद्योग स्थापित करने और गौवंश की उन्नति और जन सामान्य की पौष्टिक आहार के बारे में, सब से पहला चिन्तन 1937 की अंग्रेज सरकार की Report on the Development of the Cattle and Dairy Industries of India by Dr. Norman C. Wright, M.A., D.Sc. Ph.D. में मिलता है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत वर्ष में पाश्चात्य डेरी उद्योग जैसे डेरी उद्योग स्थापित करना हमारे देश की गरम जलवायु और गौओं की कम उत्पादकता, यातायात के साधनों की कमी के कारण व्यावहारिक नहीं पाया गया था। जो आंकड़े इस रिपोर्ट में मिलते हैं उन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत वर्ष तब भी विश्व में दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में अमरीका के बाद दूसरे स्थान पर था। प्रति व्यक्ति आहार में सारे उन्नत देशों में एक किलो से अधिक दुग्ध प्रयोग में आता था। भारत में तब भी प्रति व्यक्ति दुग्ध की उपलब्धि विश्व में सब से कम 250 ग्राम के लगभग थी। आज भी देश में दुग्ध की उपलब्धता उतनी ही है जितनी 1937 में थी। इस से श्वेत क्रान्ति के ढोल बजाने की वास्तविकता का खोखला पन उजागर होता है। भारतीय नस्ल की गौओं को यहाँ की जलवायु के अनुकूल पा कर, दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिए विदेशी उच्चस्तर के दुग्ध उत्पादक वृषभों से cross breeding को 1937 में भी ठीक नहीं ठहराया था।

एक बात यह स्पष्ट होती है कि 1937 से अब तक की सरकारी नीतियों ने देश में गोवंश में, दुग्ध उत्पादन, दुग्ध उपलब्धता में कोई भी प्रगति नहीं की है। अगर कुछ किया है तो केवल गौमाता, किसान, कृषि का नुकसान और व्यापारी वर्ग को लाभ।

भारतीय डेरी उद्योग छोटे छोटे उत्पादकों से बिचोलियों द्वारा दूध एकत्रित कर के उपचारित कर के व्यापार मात्र करता है। ऐसे एकत्रित दुग्ध की स्वच्छता और गुणवत्ता पर सदैव प्रश्न चिन्ह लगे रहे हैं। गौ वंश की नसल सुधार, हरे चारे के उत्पादन में वृद्धि सामान्यतः डेरी उद्योग की प्रथमिकता में नहीं है। यह दायित्व सरकारी प्रान्तीय पशु विकास विभाग का है। ग्रामवासियों की ऐसी उपेक्षा के चलते, डेरी उद्योग जिन ग्रामीण क्षेत्रों से दूध एकत्रित करता है, वहाँ के

परिवारों में नकद धन के लालच में अपने लिए दूध का सेवन बहुत कम किया जाता है। इस का विशेष दुष्प्रभाव कन्याओं का कुपोषण होता है, जो समाज का भविष्य निर्माण करने में अपना दायित्व पूरा नहीं कर पातीं।

1.6.1 दुग्ध उत्पादन में वृद्धि का समाधान, सरकारी योजना में कम दूध देने वाली भारतीय गौमाता में केवल अधिक दूध देने वाली विदेशी प्रजाति के वृषभों के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान माना जा रहा है। पिछले साठ वर्षों के प्रयास के बावजूद, कृत्रिम गर्भाधान करने के बाद भी सरकारी आकड़ों के अनुसार, राष्ट्रीय स्तर पर मात्र 25% सफलता ही मिल पाती है। ऐसा कह सकते हैं कि 75% प्रतिशत गोवंश के दूध न देने का काल तीन-चार महीने अधिक बढ़ जाता है। इस से गौ को चारा देने के लिए गरीब किसान पर आर्थिक बोझ और बढ़ जाता है। देश में चारे की कमी और बढ़ जाती है। उत्तम हरे चारे का प्रबन्ध हमारे डेरी उद्योग की प्राथमिकताओं में नहीं आता। भारत एक गर्म देश है। बिजली की व्यवस्था भी संतोष जनक नहीं रहती। इस के चलते कृत्रिम वीर्य को निर्धारित तापमान पर रख पाना बड़ा कठिन रहता है। कृत्रिम वीर्य की कम गुणवत्ता और कृत्रिम गर्भाधान करने वाले कर्मचारियों की असावधानी से 75% तक गौ तीन चार वर्षों में बांझ होती पाई गई हैं। विदेशों में एक एक गाय से 10 से अधिक बार सफलता से कृत्रिम गर्भाधान तक होता है। भारत वर्ष में असावधानी से किए कृत्रिम गर्भाधान से बढ़ती बांझ गौएं सब बूचड़ खाने की ओर पहुंचा दी जाती हैं। मानो भारतवर्ष में अनजाने में कृत्रिम गर्भाधान का कार्य, बूचड़ खाने चलाने वालों की मिली भगत से हो रहा है।

अनुभव के आधार पर व्यावहारिक संपूर्णता में एक वृषभ से नैसर्गिक गर्भाधान अधिक सस्ता और सफल पाया गया है।

1.6.2 दूध की गुणवत्ता का विषय गौण है। भैंस और गौ के दूध में भैंस का दूध अच्छा माना जाता है। भारतीय डेरी विशेषज्ञ तो केवल भैंस में रुचि रखते हैं। यह तथ्य कोई नहीं बाटाता कि भैंस के दूध में विटामिन डी बिल्कुल नहीं होता। भैंस के दूध में विटामिन ए भी नहीं होता। आज का चिकित्सा विज्ञान यह मानता है कि विटामिन डी और ए के न होने से मानव स्वास्थ्य पर शारीरिक ही नहीं मानसिक रोग बढ़ते हैं। सरकार और डेरी उद्योग समाज स्वास्थ्य के हित की अनदेखी करते हुए, गाय का दूध घटिया मानते हैं और मजबूरी में ले लेते हैं। सारा ध्यान केवल दुग्ध उत्पादन बढ़ाने पर है। भैंस के दूध के दाम भी ज़्यादा देते हैं। दूध की गुणवत्ता का माप दंड वसा पर आधारित है। यह एक विकृति है। आज वैज्ञानिक आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि जो वसा के तत्व हमारे मस्तिष्क और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हितकारी और अत्यन्त आवश्यक हैं वह हैं, CLA (Conjugated Linolenic Acid) और ALA (Alpha Linolenic Acid) या ओमेगा थ्री Omega three। साथ ही ओमेगा ६ और ओमेगा ३ के अनुपात में संतुलन होना चाहिए। वसा के यह गुण केवल हरे चारे पर पोषित गौदुग्ध में ही मिलते हैं। (दूसरे सब प्रकार के कृत्रिम रूप से उपचारित वसा जैसे रिफाइन्ड खाद्य वनस्पति तैल में केवल ओमेगा ६ ही होता है, ओमेगा ३ लगभग शून्य के बराबर रहता है।) ओमेगा ६ का ओमेगा ३ से अनुपात बहुत अधिक होने से मानव आहार में वसा का असुन्तलन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हो रहा है। आज के महामारी की तरह बढ़ते मधुमेह, मोटापा, हृदय रोग हमारे आहार में गलत प्रकार के वसा के सेवन के कारण ही होते हैं।

अज्ञान के कारण, केवल आर्थिक दृष्टि से केवल किसी भी अन्य प्रकार की वसा की मात्रा को दूध की गुणवत्ता का आधार बनाना समाज में रोग बढ़ाने के षडयंत्र से अधिक कुछ नहीं है।

1.6.3 दूध की स्वच्छता : भारतीय जीवन शैली में स्वच्छता का बड़ा महत्व माना जाता है। गौ दोहन से पूर्व दोहने वाले की शारीरिक स्वच्छता, हाथ धो कर, गौ के स्तन धो कर, शुद्ध बर्तन में दूध निकाला जाता है। फिर या तो धारोष्ण दूध का ही सेवन किया जाता है, या धीमी आंच पर एक उबाल दे कर दूध का सेवन करते हैं। जब माताएं अपने परिवार के लिए गौ दोहन करती हैं, इन बातों का परिवार के स्वास्थ्य के हित में ध्यान रखती हैं। परन्तु जब डेरी उद्योग के लिए दूध दुहा जाता है तो स्वच्छता का इतना ध्यान नहीं दिया जाता। इस लिए अधिकांश डेरी उद्योग के लिए एकत्रित दूध मूल रूप से इतना स्वच्छ नहीं होता जितना होना चाहिए। विदेशों में मशीनों द्वारा गौ दोहन के कारण वहां का डेरी दूध अधिक स्वच्छ होता है। डेरी उद्योग द्वारा एकत्रित अस्वच्छ दूध को आहार के लिए उपयुक्त बनाने में, कई उपचार करने होते हैं, जिन के कारण दूध की प्राकृतिक गुणवत्ता कम हो जाती है। मशीन द्वारा दुध निकालने के प्रयोग

भारत वर्ष में प्रातः सायं मशीन को साफ़ करके स्वच्छ रखने की आवश्यकता के कारण छोटे २/३ गौ पालने वाले किसान के लिए असफल रहे हैं। परन्तु गोशलाओं में जहां अधिक गौएं दुहने की व्यवस्था बनानी होती है, मशीन द्वारा दूध निकालने का विकल्प भी ध्यान में रखना चाहिए। कुशल हाथों से दूध निकाल पाने वाले न मिलने पर दूध निकालने की मशीन उपलब्ध रखनी चाहिए। मशीन द्वारा दूध निकालना गौ को किसी भी प्रकार का कष्ट या हानि नहीं करता।

1.7 वैदिक परम्परा में गो दुग्ध में वसा

अथर्व वेद के अध्याय १२ सूक्त ४ "वशा गौ" से गोपलन की वैदिक जानकारी मिलती है। वसा के विषय पर इस वैदिक सूक्त से पता चलता है, कि परिवार के पोषण के लिए ऐसी गौ रखते थे जिन के दूध में वसा तत्व कम रहता था। यह भी मिलता है कि जो परिवार अधिक वसा वाले दूध का सेवन करते हैं वे नष्ट हो जाते हैं। (आधुनिक विज्ञान भी तो मानव आहार में अधिक वसा को हानिकारक मानता है)। अधिक वसा वाले दूध की गौ ब्राह्मणों को यज्ञ करने के लिए आज्य उपलब्ध कराने के लिए दान दे दी जाती थी। साधारणतः लोग अपने सामान्य ज्ञान से दुग्ध की वसा कम करने के लिए, मलाई मखन अलग निकाल लेते थे। **गो दुग्ध को अमृत वसा के कारण नहीं माना जाता था।** पाणिनी कालीन भारत में ऐसा प्रतीत होता है कि आहार में साधारण गो दुग्ध में वसा की मात्रा १% से कम होती थी। यह एक अनुसंधान का विषय है कि आर्थिक लोभ के मोह वश क्या हम ने अपनी मूल भारतीय गाय कि प्रजाति में ही अधिक वसा की प्रजाति उत्पन्न कर दी है ?

यहां यह जानकारी प्रासंगिक है, कि विदेशों में अब अनुसंधान, कम वसा वाले दूध देने वाली गौ की प्रजातियां विकसित करने पर किया जा रहा है। व्यापारीकरण के चलते कम वसा का प्राकृतिक दूध शीघ्र ही अधिक दाम पर एक डिज़ाइनर दूध के नाम से बाज़ार में बिकेगा।

1.8 पर्यावरण संदर्भ -

1.8.1 Methane Gas : गौ की अपान वायु को ले कर पाश्चात्य विद्वानों में एक बड़ी बहस चल रही है। ऐसे आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं जिन के अनुसार विश्व भर की गौ से उत्पन्न अपान वायु में मीथेन गैस द्वारा पर्यावरण प्रदूषण संसार की सारी कारों बसों के प्रदूषण से अधिक बताया जा रहा है। पर्यावरण विशेषज्ञ तो यहां तक कहते हैं कि विश्व में गौओं की संख्या बहुत कम कर देनी चाहिए। इस तथ्य को अनदेखा किया जाता है कि सूखे अनाज चना मक्का मटरा इत्यादि आधारित /आहार से ही अपान वायु बढ़ती है। हरे चारे पर पोषित गौ बहुत कम अपान वायु बनाती है।

1.8.2 Food Miles/ Organic Agriculture

फूड माइल्स - एक नया विषय सामने आ रहा है। खाद्यान्न की उत्पादन स्थान से उपभोक्ता तक कम से कम दूरी होनी चाहिए। ताज़ी सबज़ी, ताज़ा दूध, जितना अधिक प्रयोग में लिया जाता है उतना ही ईंधन का व्यर्थ उपयोग कम होता है। यह स्वास्थ्य के हित में भी माना जाता है।

अब शहरी क्षेत्रों के लिए ताज़ा सबज़ी और दूध के लिए स्थानीय जैविक उत्पादन तक की योजनाएं योरप में चल रही हैं।

भारत वर्ष के संदर्भ में दुग्ध उत्पादन में डेरी उद्योग की भूमिका पर एक एक पुनर्विचार की आवश्यकता है।

1.9 भारतीय आहार में दूध का स्थान

हमें इस बात पर गर्व करने के लिए कहा जाता है कि दुग्ध उत्पादन में भारत वर्ष विश्व में प्रथम स्थान पर है।

परन्तु कोइ यह नहीं बताता कि FAO के अनुसार एक भारतीय गौ का प्रतिदिन दुग्ध उत्पादन विश्व भर की गौओं के औसत दुग्ध उत्पादन का मात्र 49% ही है। एक भारतीय गौ का दुग्ध उत्पादन न्यूज़ीलैन्ड की केवल हरी घास पर स्वपोषित गौ के दुग्ध उत्पादन का मात्र 20% है, और एक अमेरिकन डेरी की गौ का मात्र 10% ही है।

यह तो हमारी भारतीय प्रजाति की गौ का ही प्रताप है, कि पिछले लगभग सौ वर्षों से बिना ठीक पौष्टिक आहार के दीन दुखी रह कर भी एक माता की तरह कितना भी कम हो, परन्तु हमारे देश वासियों को दुग्ध पान करा रही हैं। और गौ को माता कहने वाले, गौ की पूजा करने वाले हम इतने संवेदना हीन हो चुके हैं कि सड़क पर कूड़ा खाती, नाली का गंदा पानी पीती, एक कृष काय गाय का दुग्ध दोहन देखते हमें तनिक भी पीड़ा नहीं होती। और ऐसे दूध को हमारे भाई स्वच्छ गोदुग्ध मान कर ग्रहण करते हैं। (इस विषय पर संलग्न परिशिष्ट 'असहाय गौ' देखें)

भारत वर्ष मुख्यतः एक शाकाहारी देश है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार शाकाहारी भोजन में मानव मस्तिष्क लिए EPA, DHA के लिए अत्यावश्यक तत्व CLA और Omega3, केवल मात्र हरे चारे पर पोषित गो दुग्ध में ही पाए जाते हैं।

यद्यपि दुग्ध उत्पादन में भारत प्रथम स्थान पर है परन्तु 2004-2005 के आंकड़ों के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रति दिन दूध की उपलब्धता मात्र 237 ग्राम है। औसतन प्रति भारत वासी प्रति दिन मात्र 100 ग्राम दुग्ध का ही सेवन कर पाता है। भविष्य में भरत वर्ष में आर्थिक व्यवस्था के सुधार से दूध की मांग बढ़ कर तीन चार गुना अधिक देखी जा रही है। व्यापार की दृष्टि से बड़े बड़े उद्योग पति इस दूध व्यापार से लाभ लेना चाहते हैं। परन्तु गौ का विकास कर के दूध उत्पादन बढ़ाने में किसी उद्योग पति ने पहल नहीं की है।

शाकाहारी साधारण ग्रामावासी इतना निर्धन है कि इस कुपोषण से उस की मानसिकता पर पड़ा दुष्प्रभाव आज भारत वर्ष के अर्थ शास्त्रियों के लिए एक चिन्ता का विषय बन चुका है।

इस प्रकार क्या हम भविष्य में मानसिक और शारीरिक रूप से एक स्वस्थ समाज बना पाएंगे?

आज हम सब का यह कर्तव्य बनता है की नवीनतम् आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों द्वारा गौ माता के आशीर्वाद से शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ सामाज का पुनर्निर्माण करें।

भारतीय गौ सेवा/संवर्धन पर परिकल्पना पत्र (भाग-2)

सुबोध कुमार (subodh1934@gmail.com) मोबाइल संपर्क : 9810612898

2-भारतवर्ष मे गौ संवर्धन

2.1 घरेलू पालतु गाय को संयुक्त राष्ट्र ने गरीबी उन्मूलन का सर्वोत्तम उपाय स्वीकार किया है। यह सोच हमारी भारतीय परम्परा के सर्वथा अनुरूप है। ग्रामीण गौ सम्पदा, पारिवारिक पोषण में सुधार व जैविक कृषि के फल स्वरूप, समाज में स्वास्थ्य, समृद्धि के साथ समरसता भी उत्पन्न करती है। गौ वंश के प्रति, सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रेम, श्रद्धा भाव की एक सतत् उच्च परम्परा रही है। आधुनिक समाज विज्ञान ने भी यह पाया है कि जिस समाज मे गोपालन होता है, वहां परस्पर मैत्री भाव अधिक पाया जाता है।

2.2 घरेलू गौ पालन परम्परा का हास - गोचरों की निरंतर कमी के कारण, सीमांत ग्रामीण परिवारों के लिए दूध न देने वाली ग्याभिन गौओं तथा बछड़ियों का पालना कठिन हो जाता है। गरीबी के चलते नवजात बछड़े बछिया को अपनी माता का पेट भर दूध भी नहीं मिलता। अकबर बादशाह के समय के इतिहास से पता चलता है कि उन दिनों बीस बीस सेर दूध की गौ सामान्य बात थी। पिछले कितने ही सताब्दियों से चले आ रहे गौ माता के कुपोषण के कारण भारतीय गौ के स्वास्थ्य और उत्पादन में भारी गिरावट आई है। कम दूध की उत्पादकता वाली गौ को कोई हिन्दु भी नहीं पालना चाहता। एक अनुसंधान के अनुसार गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश जैसे राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन (गोपालन भैंस पालन) का काम मुस्लिम समुदाय के लोग अधिक आ पड़ा है। हिन्दु समुदाय के लोग तो दूध एकत्रित कर के वितरण व्यापार का काम अधिक करते हैं। गौमाता के प्रति ग्रामीण समाज में भी श्रद्धा भक्ति से सेवा इस प्रकार लोप हो रही है। यदि गोहत्या भारत में बढ़ रही है तो उस का दायित्व भी हम हिन्दुओं पर आता है। परन्तु इस का सुधार, आधुनिक तकनीकों द्वारा स्थानीय व सस्ते हरे चारे के उपलब्ध कराने से गौ माता के स्वास्थ्य, सुधार दूध की उत्पादकता बढ़ा कर ही किया जा सकता है। पञ्च गव्य गोबर गोमूत्र औषधि इत्यादि के उत्पादन से गौ माता की सेवा बड़े गोसदन से ही सम्भव होता है। जैविक कृषि के प्रचार प्रशिक्षण का कार्य भी बड़ी गौशालाओं को करना होगा। छोटे किसान के लिए तो गौ की दूध की उत्पादकता पर भी ध्यान देना होगा।

2.3 ग्रामीण गो सेवा संसाधन केन्द्र पूर्वोक्त समस्याओं को ध्यान में ध्यान में रखते हुए यहां एक स्वावित्त पोषित, सामाजिक (निजी/सार्वजनिक भागीदारी पर आधारित) ग्रामीण शुष्क गो सेवा केन्द्र के माडल को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावित गो सेवा केन्द्रों की प्रमुख गतिविधियां

- 1- क्षेत्र की शुष्क गौओं और बछड़ियों की देखभाल।
- 2- स्थानीय गायों के लिए प्रसूति के पूर्व और बाद की सेवाएं उपलब्ध कराना।
- 3- आधुनिक तकनीकी सहयोग से स्थानीय आधार पर सस्ते पौष्टिक हरे चारे के विकल्प स्थापित करना।
- 4- संबद्ध क्षेत्र के लिए गौ संवर्धन की सेवाएं उपलब्ध कराना।
- 5- स्थानीय गौओं के लिए चारण में व्यायाम और पौष्टिक हरे चारे व स्वच्छ जल की व्यवस्था उपलब्ध कराना।
- 6- अपनी गौओं को अपने साथ लाने वाली महिलाओं और युवाओं के लिए आधुनिक गोपालन, जैविक कृषि की विधियों में प्रशिक्षण।
- 7- महिलाओं के साथ आने वाले बच्चों के लिये एकल्विद्यालय, मध्याह्न आहार, महिलाओं के लिए प्रोढ शिक्षा व्यवस्था। लघु जलपान गृह तथा पाकशाला प्रबन्धन, स्थानीय फल सब्जियों के परिरक्षण, व्यञ्जन प्रशिक्षण

- 8- आंगन बाड़ी जच्चा बच्चा योजना को जोड़ना
- 9- गोबर गैस संयन्त्र- स्थानीय जलवायु, गौ संख्या के आधार पर उपयुक्त बायोगैस संयन्त्र स्थापित करना।
- 10- गोबर, गोमूत्र से पञ्च गव्य, कीटनाषक, गो अमृत, बीजोपचार, सीना खाद (बायोडायनमिक पद्धति) की जैविक कृषि उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, प्रयोग, प्रशिक्षण।
- 11- मृत गौ काया से भिन्न भिन्न उपयोगी वस्तुओं, समाधि खाद, चमड़ा, हड्डी, सीना इत्यादि की वस्तुओं इत्यादि के निर्माण, प्रशिक्षण पर आधारित लघु उद्योग।
- 12- इन केन्द्रों का विकास स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार बहु उपयोगी लघु उद्योगों के रूप में किया जा सकता है। जहाँ स्थानीय महिलाएं अपने बच्चों के साथ अपनी गौओं को भी ला सकेंगी। युवा भी अपनी व पड़ोस की गौओं को चराने के साथ उत्तम गोपालन तकनीकी सीख सकेंगे। ऐसा होने से, ग्रामीण महिलाओं को अपने गौओं के लिए चारा, ईंधन के लिए कमर तोड़ मेहनत नहीं करनी होगी। गो सेवा के पुनीत कार्य के साथ, उन्हें गौ सेवा सुधार प्रशिक्षण, जच्चा बच्चा सुधार, बच्चों की शिक्षा संस्कार और आहार के भी लाभ होंगे। इस प्रकार केन्द्रीय सर्व शिक्षा अभियान, ग्रामीण आंगन बाड़ी योजना, महिलाओं के स्वसहायता सहकारी समूह (Self Help Groups) भी इन केन्द्रों से संचालित हो सकेंगे। युवाओं के लिए ग्रामोपयोगी व्यवसायिक प्रशिक्षण स्वरोजगार के साधन मुक्त विद्यालयों, जैविक कृषि, दुग्ध व्यापार, फल तरकारी उत्पादन के नवीनतम विषय सीख कर नगरों की ओर नौकरी के लिए पलायन को बाध्य नहीं होगा।

2.4 आवश्यक संसाधन- सामान्यतः एक गो समूह में लगभग एक तिहाइ गौ ही दुधारु होती हैं। बाकी दो तिहाइ गौओं की देख भाल का विशेष प्रबन्ध आवश्यक होता है। एक ऐसे ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ कुल मिला कर 500 गो वंश है, लगभग 300 क्षेत्र की उसरिया और बूढ़ी गौओं को ले कर केन्द्र में सम्भालने के लिए योजना बनानी होगी। क्षेत्र की सभी गौओं की पहचान और विवरण रखने की व्यवस्था करनी होगी। आधुनिक RFID प्रणाली इस के लिए बहुत उपयोगी है। (ऐसी योजना प्रथम पञ्च वर्षी गोवंश सुधार के लिए 500 तक गोवंश वाले ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बनाई भी गई थी परन्तु यह सम्भव है कि इस का आकार सरकारी रहा हो, जिस के चलते यह योजना प्रभाव शाली नहीं हुई।

भूमि- दो से चार हेक्टेयर भूमि पर ऐसे केन्द्र स्थापित हो सकते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की मुक्त ऊसर अनुपयोगी भूमि पर यह केन्द्र स्थापित हो सकते हैं। इस के लिए कम से कम दस वर्ष के पट्टे पर ऐसी भूमि का आबंटन करना होगा।

कार्य कारिणी - सब केन्द्र सामाजिक स्थानीय नेतृत्व, स्वयम् सेवी संस्थाओं के सहयोग से स्वावित्त पोषित (Section 25), जैसी इकाई के रूप में कार्य कर सकेंगी। क्षेत्रीय कृषि विकास विभाग, पशुपालन विभाग, प्रदेश के ज्ञान संस्थान कृषि विद्यालय इत्यादि भी अपना सहयोग प्रदान करेंगे। प्रान्तीय विज्ञान प्राद्योगिक संस्थान भी इस सामाजिक कार्य योजना में सक्रिय होंगे।

आरंभ में कुछ स्थानों पर ऐसे केन्द्र स्थापित कर के अनुभव ग्रहण करना होगा।

2.5 भारतीय गौओं की दुग्ध उत्पादकता में सुधार के उपाय

भारतीय नसल की गौओं में दूध की उत्पादकता में निरंतर होती भारी गिरावट का प्रमुख कारण अत्यंत गरीबी और ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी रहे हैं।

1-चरागाह तो लगभग सब समाप्त हो गए हैं।

2- गौओं के आवास, स्वच्छ पेय जल, उपयुक्त आहार, स्वस्थ जल वायु, गर्मीसर्दी के प्रभाव से बचाव के साधनों की जानकारी। और इन्हे उपलब्ध कराने के आधुनिक सस्ते विकल्प।

3-स्थानीय रूप से उपलब्ध गौ चिकित्सा सुविधाएं।

4- अन्तः प्रजनन (Inbreeding) के दुष्प्रभाव, और अच्छे प्रजनन योग्य वृषभों का न होना।

5- हर एक गौ का प्राचीन भारतीय परंपरा में वेदों तक के अनुसार चिन्हीकरण होता था।(गौ के चिन्हीकरण का

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में स्पष्ट उल्लेख मिलता है।)

6- गर्भिणी शुष्क गौओं के पोषण में ध्यान की कमी।

7-प्रजनन के बाद गौ और नवजात की उचित देख रेख।

8- छोटे बछिया बछ्ड़ों को अपनी अपनी गौ माता का खीस (collustrom) से बाद तक पूरा दूध।

9- गोसेवा के बारे मे आधुनिक जानकारी का न होना।

उपरोक्त विषयों पर ध्यान देने से गाय की मात्र तीन पीढ़ियों मे लगभग दस वर्षों में बिना विदेशी नसल की प्रजनन कृत्याओं के भी भारतीय गौ के स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति पाई गई है।

2.6 गोशाला गोसदन विषय

1- गोशालाएं अच्छी नसल के वृषभ पाल कर नन्दी शालाओं के लिए उत्तम वृषभ उपलब्ध कराने में एक बड़ी भूमिका रखते हैं। भारतीय नसल की गौ के सुधार में यह सब से महत्व पूर्ण कार्य है। इस के लिए पूरे देश भर की गोशाला एक नेतृत्व की अपेक्षा रखती हैं। यह कार्य सरकारी तंत्र पर नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि वे सब तो कृ त्रिम गर्भाधान की योजना मे व्यस्त रहेंगे। इस प्रकार यह संस्थाएं भारतीय नसल की गौ संवर्धन मे बड़ योग दान दे सकती हैं।

2- जैविक कृषि के लिए उर्वरक, गोबर गैस, गोबर गोमूत्र, सींग खाद कीटनाशक इत्यादि वस्तुओं के निर्माण, अनुसंधान, प्रशिक्षण का दायित्व भी बड़ी गोशालाओं गोसदनों को निभाना चाहिए।

3- स्वच्छ गौ दुग्ध का उत्पादन कर के, पंच गव्य पदार्थ निर्माण कर के यह संस्थाएं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो सकती हैं।

3- गौ आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में :

3.1 दूध की गुणवत्ता मे सुधार - आज के वैज्ञानिक अनुसंधान मानव स्वास्थ्य के लिए, गौ दुग्ध में वसा की मात्रा से वसा की गुणवत्ता को अधिक महत्व देते हैं। केवल हरे चारे पर पोषित गौओं के दूध में ही CLA (Conjugated Linolenic Acid) और ALA (Alpha linolenic Acid) Omega 3-सीएलए, और ओमेगा3 वसा पाए जाते हैं। आज के युग में महामारी की तरह फैलते नए नए रोग जैसे मुटापा, मधुमेह, कैंसर, उच्च रक्त चाप, हृदय रोग, आर्थराइटिस का मुख्य कारण हमारे आहार में आवश्यकता से अधिक और वह भी गुण वत्ता विहीन वसा पाए गए हैं। पर्याप्त मात्रा में हरा चारा न खिलाने पर दूध की वसा में ओमेगा 6 (Omega 6) वसा की मात्रा बनी रहती है परन्तु ओमेगा 3 (Omega 3) की मात्रा लगभग शून्य रहती है। ओमेगा 6 (Omega 6) वसा भी मानव स्वास्थ्य के लिए एक अत्यावश्यक तत्व है। परन्तु मानव स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार में ओमेगा 3 और ओमेगा 6 दोनों की मात्रा बराबर रहनी चाहिए। आधुनिक प्रचलित (रिफाइन्ड आयल) वनस्पति तैल में केवल ओमेगा 6 रहता है। इस के फलस्वरूप रिफाइन्ड आयल के आहार में प्रयोग से ओमेगा6 : ओमेगा3 का अनुपात मानव आहार में 30:1 तक पाया जाता है, जब कि यह अनुपात 1:1 होना चाहिये। इस तीस गुना अधिक ओमेगा 6 के कारण कोलेस्ट्रॉल का नियंत्रण तो हो जाता है, परन्तु अधिक ओमेगा 6 के आहार से उत्पन्न रोग बढ़ जाते हैं। चिकित्सा

विज्ञान की भाषा में यह metabolic products of excessive Omega 6 के रूप में inflammatory prostaglandins, thromboxanes, leukotrienes रक्त विकार से उत्पन्न रोग बताए जाते हैं। साधारण भाषा में शरीर की मांस पेशियों में दर्द, रक्त की गांठ बनने से रक्त स्राव में रुकावट, रक्त कैंसर जैसे रोग समझे जा सकते हैं।

3.2 TMR (टोटल मिक्स्ट राशन या पूर्ण मिश्रित राशन) के स्थान पर हरे चारे का महत्व - अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि डेयरी उद्योग में गायों के आहार के लिए प्रचलित; पूर्व मिश्रित चारे की प्रणाली जिसे की TMR के नाम से जाना जाता है; के प्रयोग से गौ दुग्ध की उत्पादकता तो बढ़ जाती है। साथ ही वसा तत्व भी बढ़ता है। परन्तु साथ में आवश्यक परिमाण में हरा चारा न देने से निम्न गुणवत्ता वाले अधिक ओमेगा 6, और शून्य मात्रा ओमेगा 3 वसा वाले दूध का उत्पादन बढ़ता है। यह कमी डेरी उद्योग द्वारा विकसित गौ आहार के अनुसंधान द्वारा पूरी की जानी चाहिए। विभिन्न प्रकार के बढ़ते आधुनिकतम रोगों का यह भी एक बड़ा कारण है। विदेशों यह विश्वास भी दृढ़ होता जा रहा है कि जैविक धारोष्ण दूध ही जो केवल चरागाहों की हरी जीवंत खुराक पर पोषित गौएँ प्रदान कर सकती हैं उत्तम दूध है। भारतीय पशुपोषण वैज्ञानिक आहार में DM (Dry matter) से आसक्त रहते हैं। स्वपोषित हरे चारे, गोचर में व्यायाम, खुली हवा, खुली धूप, स्वच्छ पेय जल, गौ के बैठने के स्थान पर सुविधा (bedding) पर ध्यान बहुत कम है।

3.3 सी.एल.ए (CLA) व ओमेगा-३ - सी.एल.ए (कॉजुगटेड लिनोलेइक अम्ल) व उच्च ओमेगा-३ एलए (अल्फा लिनोलीनिक अम्ल) जैसे पोषक अम्ल, केवल हरे चारे पर पोषित गायों के दूध में ही पाए जाते हैं। अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि सी.एल.ए व ओमेगा-३ युक्त दूध ही मात्रा ऐसा पौष्टिक आहार है, जो मनुष्यों को होने वाले प्रमुख हासकारी रोगों जैसे कि मोटापा, स्तन कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गठिया, अल्जाईमर्स, आदि के उपचार एवं प्रतिरोध में सहायक हो सकता है।

विटामिन ए,ई व के (A, E & K) वसा में घुलनशील होते हैं, किन्तु केवल सी.एल.ए और ओमेगा-३ वसा की मौजूदगी में ही विटामिन अपने गुणों का लाभ मानव शरीर में दे सकते हैं। इसे Bioavailability कहा जाता है।

हमारे भोजन में मौजूद खनिज भी पाचन के लिए इन्हीं उच्च गुणवत्ता वाले वसा तत्वों पर निर्भर करते हैं

तथा इन तत्वों की मौजूदगी में ही यह अपना पूरा लाभ मानव शरीर को दे पाते हैं। उदाहरण के लिए, अब यह साबित हो चुका है कि बिना इन पोषक वसा अम्लों की एक निश्चित न्यूनतम मात्रा के हम भोजन में से कैल्शियम पचा नहीं सकते। जब कि विटामिन डी युक्त कैल्शियम की गोलियों का एक बहुत बड़ा बाज़ार है, जिस की उपयोगिता संदेहास्पद ही है।

(**SunLight and Vitamin D-** इस स्थान पर विटामिन डी के बारे में भी कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा। यथार्थ में विटामिन डी जैसा कोई विटामिन नहीं होता। मानव त्वचा पर प्रातः सायं की तिरछी पड़ने वाली सूर्य की किरणों (UVA) से मानव शरीर में एक तत्व उत्पन्न होता है जिसे विटामिन डी का नाम दिया गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार स्वस्थ शरीर के लिए प्रातः सायं के समय २० से ३० मिनट त्वचा पर सूर्य की किरणों का सेवन अत्यवश्यक है।

3.4 मानव मस्तिष्क 70% फास्फोरस वसा का बना होता है। अभी तक वैज्ञानिक मस्तिष्क के लिए जिन दो वसा तत्वों का पता लगा पाए हैं वे ई पी ए EPA (Ecosa Pentaenoic Acid) और डी एच ए DHA (Decosa Hexaenoic Acid) कहलाते हैं। यह दोनों वसा तत्व Long chain Omega 3 हैं जो प्राकृतिक रूप में केवल हरे चारे पर पोषित गौ दुग्धके ओमेगा 3 से ही हमारी पाचन कृया द्वारा मिलते हैं। शाकाहारी भोजन में फासफोरस का मुख्य स्रोत दूध ही पाया गया है। इस प्रकार मानव मस्तिष्क की उन्नति में शाकाहारी आहार में गोदुग्ध सब से अधिक महत्वशाली सिद्ध होता है। भारतीय परम्परा में इसी लिए गौ दुग्ध अमृत कहलाता है। (सूखे मेवा जैसे बदाम , अखरोट की गिरी, फ्लाक्स FLAX (अलसी) के बीज में भी प्रचुर मात्रा में ओमेगा 3 रहता है।)

यह अनुसन्धान न्यूजीलैन्ड के और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने किया है कि इन तत्वों से युक्त दूध केवल उन गायों से ही प्राप्त किया जा सकता है, जो कि हरी घास वाले खुले चरागाहों में धूप का सेवन करते हुए व हरे-नीली शैवाल की खुराक पर पोषित हों। न्यूजीलैन्ड अपनी विदेश व्यापार से होने वाली आय का सब से बड़ा भाग; जो उस देश की कुल आय का लगभग ४० % है; इसी उच्च पौष्टिकता वाले दूध देने वाली गौ के भिन्न उत्पाद निर्यात से प्राप्त करता है।

3.5 A1 A2 Milk ए १ व ए २ प्रकार का दूध

न्यूजीलैन्ड के वैज्ञानिकों ने यह खोज भी की है कि बोस टोरस (**Bos Taurus**) नस्ल की गायों से प्राप्त दूध; जिसे कि ए १A1 प्रकार का दूध कहा जाता है; हमारी पाचन प्रक्रिया से गुजरने के दौरान ७ तत्वों का एक विष पैदा करता है, जिसे बिटा-कासोमोर्फिन 7 (**BCM-7**) के नाम से जाना जाता है। यह बीसीएम-७ ऐसा विषाक्त है जो छोटे बच्चों में मंद बुद्धि autism , व टाइप १ मधुमेह pediatric diabetease को और बड़ों में हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, अल्जाईमर्स आदि रोगों को जन्म देते है। केवल देशी नस्ल (**Bos Indicus**) गिरिन्सी, जरसी, आइस लैण्ड की गायों का दूध; जिसे की टाइप ए२ A२ दूध की संज्ञा दी गई है; इन विषाक्तों से मुक्त पाया गया है।

भारत; जहाँ पर की विश्व में सब से अधिक देसी नस्ल की गाय पाई जाती; के लिए यह एक बहुत ही महत्व पूर्ण खोज है, यह एक और परिणाम है, जो हमारी परंपरा से चली आ रही देसी गायों के दूध की उच्च गुणवत्ता के विश्वास को ओर भी सुदृढ़ करता है।

न्यूजीलैन्ड के वैज्ञानिकों ने ए२ प्रकार के दूध की गुणवत्ता को स्थापित कर 'अच्छे दूध' की परिभाषा में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। आने वाले समय में अच्छे दूध का मतलब ही हरे चारे पर पोषित देसी भारतीय नस्ल की गायों से प्राप्त दूध ही माना जाएगा। (जर्सी, ग्युरेन्सी व आइस लैंडिक नस्लों की गायों का दूध भी ए२ टाइप का पाया गया है।)

इस प्रकार भारत के देहात की गायों का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल माना जा सकता है, जहाँ की 80% से

भी अधिक देसी नस्ल की ही गाएँ पाई जाती है। अतः यह हमारे लिए बेहद जरूरी हो जाता है कि हम भारत में गायों के लिए हरे व पौष्टिक चारे की उपलब्धता को बढ़ाने का हर संभव प्रयास करें ताकि दूध की उत्पादकता व गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। साथ ही एश A1 प्रजाति के वृषभों से देसी नस्ल की गौओं का गर्भाधान भी बन्द करना होगा। न्यूजीलैन्ड के किसान अब अपनी गौओं के गर्भाधान में यह सावधानी बर्त रहे हैं।

3.6 Probiotics प्रोबायोटेक्स - विश्व भर का डेयरी उद्योग दुग्ध उत्पादकता को उच्च गुणवत्ता वाले जैविक, प्रोबायोटेक दूध व दुग्ध उत्पादों की ओर ले जाने की ओर अग्रसर है। हमें यहाँ, यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि परम्परागत भारत का समस्त दूध उत्पादन मूलतः मुक्त रूप से भूमि पर पोषित गायों का उच्चतम गुणवत्ता वाला दूध ही रहा है। आधुनिक डेयरी विज्ञान भी धीरे-धीरे इस तथ्य के प्रति जागरूक हो रहा है। यहाँ तक कि अब तो गायों के थन से सीधे धारा के दूध के सेवन की गुणवत्ता भी स्वीकार की जाने लगी है जिसे कि हमारे यहाँ भारत में धारोष्ण दूध के रूप में सदा से माना जाता रहा है।

यह व्यावसायिक रूप से कुछ महत्व पूर्ण चुनौतियाँ है, जिन्हें कि भारत में भविष्य के विश्व दुग्ध बाज़ार को ध्यान में रखते हुए सोचने की आवश्यकता है।

3.7 Hydroponics Fodder गोचर भूमि के विकल्प - केवल समुचित गोचर भूमि के विकास पर ही उपरोक्त प्रकार के उत्तम कोटि के दुग्ध व दुग्ध उत्पादों का उत्पादन संभव है। किंतु भारत में गोचर भूमि के विस्तार की संभावनाएँ बहुत ही सीमित होती जा रही है। जनसंख्या के दबाव के कारण गोचर भूमि के बढ़ पाने की संभावनाएँ बहुत कम है। चारे की खेती भी आर्थिक रूप से एक कम उत्पादकता वाला ही काम माना जाता है। अतः आधुनिक तकनीकों का उपयोग और अच्छे पशु आहार के लिए नई सोच बेहद जरूरी हो गई है। उदाहरणार्थ कुछ उपायों का उल्लेख आगे किया जा रहा है। (इन सब विधियों का अनुसन्धानिक प्रयोग पूर्वी दिल्ली स्थित महर्षि दयानन्द गो संवर्धन केन्द्र मे सफलता पूर्वक किया जा रहा है)

मृदा विहीन कृषि (Hydroponics Fodder) - मृदा विहीन कृषि (बिना मिट्टी के नियंत्रित वातावरण में खेती) केवल ३० वर्ग मी. भूमि से १००० कि.ग्रा प्रतिदिन हरी अंकुरित पैदावार ली जा सकती है जो कि सामान्य रूप की खेती से ३०० गुणा अधिक है। साथ ही इस खेती में सामान्य की तुलना में बहुत कम लगभग मात्र ४% जल की ही आवश्यकता रहती है। सभी प्रकार के मोटे अनाजों को अंकुरित कर उन की २०० से.मी. तक की बालियों का चारे के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार से अंकुरित अनाज सामान्य चारे से तीन गुना तक अधिक पौष्टिक होता है। इस प्रकार मृदा विहीन खेती सामान्य चारे का एक अच्छा विकल्प हो सकती है। इस प्रकार की खेती की गुणवत्ता १९६० से ही कनाडा में लम्बार्ट के , डॉ मुरे स्मिथ (Dr. Murray Smith) ने दौड़ के घोड़ों पर अपने प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर दी थी।

दुधारू पशुओं के लिए मृदा विहीन खेती का प्रयोग अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैन्ड, इज़राइल आदि देशों में तो एक स्थापित नीति का रूप ले चुका है।

इस प्रकार नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से गायों को गोचर तक ले जाने के स्थान पर गोचर को ही गायों तक लाया जा सकता है। भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हरे चारे का विकास करते हुए, मृदा विहीन कृषि द्वारा १२ से १५ किलो तक अंकुरित मोटे अनाजों की २०० से. मी. की बालियों का चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है।

मृदा विहीन कृषि जैविक है - मृदा विहीन कृषि जैविक, रोग मुक्त व कीट नाशक रहित खेती है। इस खेती में मोटे अनाजों का अंकुरण किया जाता है, अतः यह सहज पचने वाला, खनिजों व विटामिन युक्त पौष्टिक आहार है। जैविक हरा चारा, सूखी कुट्टी और कुटे हुए मोटे अनाजों की तुलना में सुपच्य होने के कारण अधिक ऊर्जा व शक्ति प्रदान करता है। मृदा विहीन कृषि से तैयार होने वाला चारा अन्य किसी भी तरह के चारे की तुलना में अधिक सुपच्य व पोषक होता है।

उत्तरांचल में मृदा विहीन कृषि - उत्तरांचल के लिए उपयुक्त मृदा विहीन कृषि संयंत्र सरलता पूर्वक हमारे प्रस्तावित गौ-सेवा केंद्रों में स्थापित किए जा सकते हैं। वास्तव में तो UCOST व परमार्थ निकेतन के स्वामी जी महाराज पिछले कई वर्षों से उत्तरांचल में मृदा विहीन कृषि द्वारा चारे के उत्पादन में रुचि ले रहे हैं। यहाँ यह ध्यान दिलाना आप्रसांगिक न होगा कि, मई १९८८ में गोपेश्वर, चमोली स्थित गौ-संवर्धन फ़ार्म में एक आयातित चारा संयंत्र 'Fometa' को स्थापित किया गया था। जिस ने तीन वर्ष तक प्रतिदिन १००० किलो चारे का नियमित उत्पादन दिया, किंतु उस के बाद कुछ अपरिहय कानूनी कारणों से इन संयंत्रों का प्रयोग भारत भर में बंद कर देना पड़ा।

आज बीस वर्ष बाद तकनीकी ज्ञान में बहुत अधिक प्रगति हो चुकी है व उत्तरांचल का पर्यावरण भी मृदा विहीन कृषि के लिए सर्वथा उपयुक्त है। अब इन संयंत्रों के आयात की भी आवश्यकता नहीं है। इन्हें सहज ही स्थानीय तौर पर बनाया जा सकता है। यद्यपि इन के रख-रखाव व संचालन के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता रहती है। तो भी यह आशा दूर की कौड़ी न मानी जाएगी कि थोड़े ही प्रयास से गौ-सेवा केंद्रों पर इन संयंत्रों को सफलतापूर्वक संचालित किया जा सकता है व यह गायों के लिए पौष्टिक हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने का आधुनिक तकनीकी पर आधारित सस्ता व सरल उपाय साबित हो सकता है।

3.8 Harvesting of leaf fodder. सहजन, सुबबुल, शहतूत, बांझ की पत्तियाँ- Moringa-Oleifera, Leucaena, Mulberry & Oak - जैसे सदाबहार वृक्षों की पत्तियाँ गायों के लिए उत्तम पोषक आहार मानी जाती हैं। किंतु भारत में इन सदाबहार पेड़ों की सघन बुआई व काँट-छाँट कर चारे के रूप में प्रयोग पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। जब कि सहजन के सघन वनों की खेती से एक हैक्टियर से ६५० टन वार्षिक तक चारा प्राप्त किया जा चुका है। (Dr. Martin L Price, Echo-technical notes, The Moringa Tree 2007). जो कि खेती की सघन विधियों द्वारा किए गए चारा उत्पादन से लगभग तीन गुणा अधिक है। (देखें - Fodder and Fodder grasses of India by Dr. Punjab Singh). इन पेड़ों की ६ से १० किलो तक हरी पत्तियाँ उपरोक्त हरे चारे के साथ गायों के लिए सर्वोत्तम आहार हो सकती हैं। जिन का चारे के रूप में प्रयोग वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है। देखें- Effect of feeding different levels of Moringa Oleifera to creole dairy cows on intake, digestibility, Milk production and composition, Nadir Reyaes, Sanchez, Eva Spornidij Inger Lesdin)

3.9 Marine source feeds जलीय खाद्य चारा - ओमेगा-३ एएलए से युक्त दूध के लिए जलीय खाद्य चारे का प्रयोग भी उपयुक्त पाया गया है। पशु पोषण विशेषज्ञ तो गायों को चारे में मछली की छीजन मिला कर देने की सलाह भी देने लगे हैं। जब कि गाय एक शाकाहारी प्राणी है, और मछली की छीजन का उस के लिए लंबे समय तक प्रयोग करने पर, परिणाम पूर्व में प्रयुक्त अन्य उपायों की तरह ही मेड काऊ रोग जैसे रोगों का कारण भी बन सकता है। अतः एक शाकाहारी विकल्प के रूप में अजोल्ला व अन्य शैवाल पर विचार किया जा सकता है। दक्षिण भारत में अजोल्ला का उत्पादन उथले तालों में सस्ता, सरल, प्रभावी लाभप्रद पाया गया है। इस प्रकार पैदा किया गया शैवाल २से ३ किलो तक गायों के चारे में मिला कर देने पर वहाँ की गायों के दूध उत्पादन में वृद्धि देखी गई है। अजोल्ला व अन्य हरे-नीले शैवालों में उत्पादन की भारी संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं। दक्षिण से मिलने वाले समाचारों के अनुसार एक हैक्टियर के ताल में साल भर में ७७० टन से भी अधिक अजोल्ला का उत्पादन देखा गया है।

3.9a Hay feed. सूखी भूसी का चारा - पर्याप्त मात्रा में हरे चारे, गोचर के अभाव में गौओं को सूखा भूसा खिलाने का मजबूरी में, भारत वर्ष से ही प्रचलन आरम्भ किया गया था, कोई भी उन्नत देश सूखे भूसे पर

आधारित गौ आहार व्यवहार में नहीं लाता।

हरे चारे के साथ-साथ २ से ३ किलो तक सूखी भूसी का भी चारे में प्रयोग गायों के लिए किया जाता है।

हमारे वैज्ञानिक यूरिया उपचारित, Protein bypass इत्यादि तथा fungii फफूंदी उपचारित कर के भूसे की उपयोगिता, पाचकता बढ़ाने पर अनुसंधान कर रहे हैं। परन्तु प्रकृति से खिलवाड़ से भविष्य में क्या दूर गामी परिणाम होंगे यह भी एक अनुसंधान का महत्वपूर्ण अंग है।